उच्च शिक्षा में स्नातक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की मानसिक योग्यता एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन (उज्जैन शहर के परिप्रेक्ष्य में)

शिक्षा शास्त्र में पीएच.डी. उपाधि हेतु शोध प्रस्तावना

शोध निर्देशिका

श्रअश्द डाॅ.मंजू शर्मा

शिक्षा संकाय

ज्योति विद्यापीठ, महिला विश्वविद्यालय

(जयपुर, राजस्थान)

शोधार्थी

श्रअश्द श्वेता पाण्डेय

म्दतवससउमदज दवण् - श्रण्टण्त्.प्/18/10014

शिक्षा एवं प्रविधि संकाय,

ज्योति विध्यापीठ महिला विश्वविद्यालय

(जयपुर, राजस्थान)

अनुक्रमणिका

01. शोध की पृष्ठभूमि

02. अध्ययन का औचित्य

03. संबंधित साहित्य का अध्ययन

04. शोध साहित्य का सारांश

05. शोध प्रश्न

06. समस्या का कथन

07. शोध अध्ययन के उद्देश्य

08. चरों की परिभाषा

09. परिकल्पना

10. शोध विधि

11. जनसंख्या

12. प्रतिदर्श

13. शोध उपकरण

14. प्रदत्तों की प्रकृति

15. सांख्यिकी विधियां

16. परिसीमाएं विधियां

17. अध्ययन का वर्गीकरण

संदर्भ ग्रंथ सूची

उच्च शिक्षा में स्नातक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं की मानसिक योग्यता एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन (उज्जैन शहर के परिप्रेक्ष्य में)

शोध की पृष्ठभूमि -

शिक्षा शब्द संस्कृत के शिक्ष् धातु से बना है। जिसका अर्थ है सीखना या सीखाना। यानि इस अर्थ में शिक्षा सीखने या सिखाने की प्रक्रिया है। शिक्षा के लिए विधा शब्द का भी उपयोग किया जाता है। जिसका अर्थ होता है जानना। एजुकेशन शब्द लेटिन भाषा के चार शब्दों से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है प्रशिक्षित करना, अंदर से बाहर निकालना, पालन पोषण करना और आंतरिक से बाह्य की तरफ जाना। शिक्षा व्यक्ति की अनिर्हित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्व को विकसित करने वाली प्रक्रिया है। यही प्रक्रिया निभाने के लिए समाजीकृत करती है तथा समाज में एक सदस्य एवं जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए व्यक्ति की आवश्यक ज्ञान तथा कौशल उपलब्ध कराती है। शिक्षा शब्द के प्रयोग को देखते हुए मोटे तौर पर यह दो रूपों में प्रयोग में लाया जाता है। व्यापक रूप में तथा संकुचित रूप में। संकुचित अर्थ में शिक्षा किसी समाज एक निश्चित समय तथा निश्चित स्थानों (विद्यालयों, महाविद्यालयों में सुनियोजित ढंग से चलने वाली एक सोद्देश्य) सामाजिक प्रक्रिया है। जिसके द्वारा छात्रा निश्चित पाठ्यक्रम को पढ़कर अनेक परीक्षाओं को उत्तीर्ण करना सीखता है।

शिक्षा का विकास –

आजकल बालिकाएं अंग्रेजी भाषा के प्रति ज्यादा जागरूक और सचेत हो गई हंै। प्रत्येक विद्यार्थी यह जानता है कि उसके लिए तथा भावी जीवन के लिए अंग्रेजी भाषा का क्या महत्व है। आज का परिप्रेक्ष्य की बात करें तो हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम पढ़ना मानसिक योग्यता का कारण नहीं रह गया अपितु ये आर्थिक कारण ज्यादा बन गया। बालिका की मानसिक योग्यता (बुद्धि स्तर) में अंतर तो होता है किंतु उस स्तर तक जितना वह महसूस करेंगे। विद्यार्थी अपने माध्यम से शिक्षा से अपने व्यक्तित्व को निखारता है, जिससे उसकी प्रगति का मार्ग प्रशस्त होता है। प्राचीनकाल - प्राचीन भारत में जिस शिक्षा व्यवस्था का निर्माण किया गया था, वह समकालीन विश्व की शिक्षा व्यवस्था से समुन्नत व उत्कृष्ट थी लेकिन कालांतर में भारतीय शिक्षा का व्यवस्था ह्यास हुआ। विदेशियों ने यहां की शिक्षा व्यवस्था को उस अनुपात में विकसित नहीं किया, जिस अनुपात में होना चाहिए था। अपने संक्रमणकाल में भारतीय शिक्षा को कई चुनौतियों व समस्याओं का सामना करना पड़ा। आज भी ये चुनौतियां व समस्याएं हमारे सामने है, जिनमें दो-दो हाथ करना है परंतु मेकोले द्वारा अंग्रेजी शिक्षा के संक्रमण के कारण भारत की प्राचीन शिक्षा व्यवस्था का अंत हुआ।

हायर एजुकेशन - उच्च शिक्षा का अर्थ है सामान्य रूप से सबको दी जाने वाली शिक्षा से ऊपर किसी विशेष विषय या विषयों में विशेष, विशद् तथा सूक्ष्म शिक्षा। यह शिक्षा के उस स्तर का नाम है, जो महाविद्यालयों, व्यवसायिक विश्वविद्यालयों, कम्युनिटी महाविद्यालयों, लिबरल आर्ट काॅलेजों एवं प्रौद्योगिकी संस्थानों आदि के द्वारा दी जाती है। प्राथमिक एवं माध्यमिक के बाद यह शिक्षा का तृतीय स्तर है जो प्रायः ऐच्छिक होता है। इसके अंतर्गत स्नातक परास्नातक एवं व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण आदि आते हैं। ऐसी शिक्षा का स्वरूप विशद्ता के साथ भारत वर्ष में प्रतिष्ठित हुआ था। उच्च शिक्षा देने वाले भारतीय गुरूकुलों की बड़ी विशेषता यह थी कि उनमें

प्रारंभिक शिक्षा से लेकर उच्चतम शिक्षा शिष्याध्यापक प्रणाली (मोनीटोरयिल सिस्टम) से दी जाती थीं भारत का उच्च शिक्षा तंत्रा अमेरिका, चीन के बाद विश्व का तीसरा सबसे बड़ा उच्च शिक्षा तंत्रा है।

विगत 50 वर्षों में देश के विश्वविद्यालयों की संख्या में 11.6 गुना महाविद्यालयों में 12.5 गुना विद्यार्थियों की संख्या में 60 गुना और शिक्षकों की संख्या में 25 गुना वृद्धि हुई है। सभी को उच्च शिक्षा के समान अवसर सुलभ कराने की नीति के अंतर्गत संपूर्ण देश में महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है और साथ ही उच्च शिक्षा की अवस्थापना सुविधाओं पर भी विनियोग भी तद्नुरूप बढ़ा है। जैसे - शैक्षिक सहपाठी, अध्यापक-महाविद्यालय संगठन एवं विद्यार्थी। यदि विद्यार्थी स्वयं इन सभी पक्षों में सामंजस्य संबंधों को विकसित करता है तो यह सुसमायोजित कहलाता है। इसी परिप्रेक्ष्य में समायोजन मापन द्वारा डिग्री कॉलेजों में अध्ययनरत विद्यार्थी हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम की उपलब्धि के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया गया है ताकि शिक्षा के समय उद्देश्यों की पूर्ति की सहायता प्राप्त कर सके। शिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन विद्यार्थियों की रूचि, आवश्यकता एवं बुद्धि स्तर योग्यता के अनुरूप संपादित किया जाता है।

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी को इस प्रकार शिक्षा प्रदान करना है, जिससे वह अपना उच्चतम विकास एवं उचित समायोजन कर सके।

अध्ययन का औचित्य –

प्रत्येक विद्यार्थी की मानसिक योग्यता अलग होती है तथा किसी भी परिस्थिति में समायोजन करने की क्षमता भी अलग-अलग होती है। प्रस्तुत अध्ययन के द्वारा हम यह जानना चाहते हैं कि हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम से अध्ययनरत विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता एवं समायोजन पर क्या प्रभाव पड़ता है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन -

संबंधित साहित्य का अध्ययन हमारी सहायता करता है कि अन्य शोधकर्ताओं ने संबंधित समस्या के क्या हल निकालते हैं और कौन से प्रश्न अभी अनुचारित रह गए हैं। यह शोधकर्ताओं की मदद इस विषय पर भी करता है कि कहीं वह पुनः उसी विषय की तथा सेंपल की पुनरावृत्ति न हो जाए। यह पूर्व कल्पनाओं के साथ महत्वपूर्ण सुझाव देने में भी सहायक होता है, जिससे शोधकर्ता को शोध करते समय आसानी से आंकड़े उपलब्ध हो जाए।

सैंगर, कल्पना (2002) ने महाविद्यालयों में जाने वाली किशोर छात्राओं में बुद्धिमता एवं सृजनात्मकता के संदर्भ में समायोजन व भावनात्मक सुरक्षा का अध्ययन शीर्षक पर पी.एचडी. स्तरीय शोध कार्य किया और निष्कर्ष में पाया कि भावनात्मक सुरक्षा-असुरक्षा, स्पष्टता, स्वतंत्राता, उपलब्धि, संगठन, समायोजन और सृजनात्मकता से नकारात्मक रूप से संबंधित थी। भावनात्मक सुरक्षा-असुरक्षा, संघर्षपूर्ण, पारिवारिक वातावरण से सकारात्मक संयोग, स्वतंत्रता, सक्रिय वातावरण से सकारात्मक जबकि संयोग स्वतंत्रता, सक्रिय संगठन, व्यक्ति, सांस्कृतिकता, नैतिक, धार्मिक, महत्वपूर्ण बुद्धि और सृजनात्मकता से नकारात्मक रूप से संबंधित थी।

मार्टिन लुई (2003): ने पुरूष महिला शिक्षकों के मध्य उनकी व्यक्तित्व संबंधी आवश्यकताओं तथा समायोजन से संबंधी तनाव का अध्ययन किया। प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष प्राप्त हुए कि पुरूष एवं महिला अध्यापकों में समान स्तरीय तनाव पाया गया। महाविद्यालय विद्यालयों के पुरूष अध्यापक, महिला अध्यापकों की तुलना में अधिक तनावग्रस्त थे। का◌ॅलेज स्तरीय महिला एवं पुरूष अध्यापकों में समान स्तरीय तनाव पाया गया। उच्च रूप से समायोजित पुरूष एवं महिला अध्यापकों में समान तनाव पाया गया। निम्न रूप से समायोजित महिला एवं पुरूष अध्यापकों में समान स्तर का तनाव पाया गया। उच्च व्यक्तित्व संबंधी आवश्यकता वाले महिला एवं पुरूष अध्यापकों में तनाव का एक जैसा स्तर पाया गया। निम्न स्तर की व्यक्तित्व आवश्यकता रखने वाले पुरूष एवं महिला अध्यापकों में समान स्तर का तनाव पाया गया। माध्यमिक स्तरीय विद्यालय पुरूष अध्यापकों में समायोजन एवं तनाव में सार्थक संबंध पाया गया। माध्यमिक स्तरीय विद्यालयी महिला अध्यापकों में तनाव तथा समायोजन में महत्वपूर्ण नकारात्मक सह-संबंध पाया गया। समायोजन एवं व्यक्तित्व संबंधी आवश्यकताओं के मध्य घनात्मक सार्थक सह-संबंध पाया गया।

श्रीवास्तव गौरी (2003): ने अपने अध्ययन ग्रोथ इन हायर एजुकेशन आ◌ॅफ वुमन इन इंडिया में पाया कि लड़कियों ने उच्च शिक्षा व व्यावसायिक शिक्षा ने सहभागिता शुरू कर दी है। लड़कियां वर्तमान समय में जिन पाठ्यक्रमों में प्रवेश ले रही हैं, वे हैं एम.का◌ॅम., इंजीनियरिंग, आर्किटेक्चर, चिकित्सा और इस प्रकार से अन्य व्यावसायिक पाठ्यक्रम इत्यादि यह सभी लड़कियों की व्यावसायिक शिक्षा में सहभागिता को प्रोत्साहित करते हैं तथा धीरे-धीरे समाज में लिंग भेदभाव तथा गैर परंपरागत व्यावसायिक शिक्षा के प्रति लड़कियों को प्रोत्साहित करते हैं। उन्होंने पाया कि महिलाओं ने उच्च एवं व्यावसायिक शिक्षा में भाग लेना शुरू कर दिया है। वह पाठ्यक्रम

जो महिलाओं के लिए विशेष रूचि के रूप में उभर रहे हैं। उपर्युक्त है यह महिलाओं का गैर पांरपरिक पाठ्यक्रमों में सहभागिता के मिथक को धीरे-धीरे महिलाओं की स्थिति में सुधार हो रहा है। अभी शहरी क्षेत्रा की झोपड़ पट्टियां एवं ग्रामीण क्षेत्रा की महिलाओं की वही पिछ्ड़ी हुई स्थिति है।

एंडरसन नील एवं अन्य (2003) में यूरोपीयन समुदाय में विभिन्न व्यवसायों, सामान्य मानसिक योग्यता की वैधता का अलग विश्ले गुणात्मक अध्ययन शीर्षक पर प्रयोजनात्मक शोध किया और निष्कर्ष में पाया कि जा◌ॅब जटिलता को सामान्य मानसिक योग्यता क्रियात्मक रूप में सामान्य करती है। जा◌ॅब जटिलता को तीन वर्ग निम्न माध्यम एवं उच्च जटिलता पर सामान्य मानसिक योग्यता का परीक्षण किया। संयुक्त राष्ट्रों की तुलना में यूरोपीयन समुदाय के लोगों में समान परिणाम पाया गया।

सिंह एच., (2003) पुरूष महिला शिक्षकों के मध्य उनकी व्यक्तित्व संबंधी आवश्यकताओं तथा समायोजन से संबंधी तनाव का अध्ययन विषय पर शोध कार्य किया गया। इन्होंने अपने निष्कर्ष में पाया कि पुरूष अध्यापक, महिला अध्यापकों की तुलना में अधिक तनावग्रस्त थे। का◌ॅलेज स्तरीय महिला एवं पुरूष अध्यापकों में समान स्तरीय तनाव पाया गया। उच्च रूप से समायोजित पुरूष एवं महिला अध्यापकों में समान स्तर का तनाव पाया गया। उच्च व्यक्तित्व संबंधी आवश्यकता वाले महिला एवं पुरूष अध्यापकों में तनाव का एक जैसा स्तर पाया गया। निम्न स्तर की व्यक्तित्व आवश्यकता रखने वाले पुरूष एवं महिला अध्यापकों में समान स्तर का तनाव पाया गया। माध्यमिक स्तरीय विद्यालयी पुरूष एवं महिला अध्यापकों में समायोजन एवं तनाव में सार्थक संबंध पाया गया। माध्यमिक स्तरीय विद्यालय महिला अध्यापकों में तनाव तथा समायोजन में महत्वपूर्ण नकारात्मक आवश्यकताओं के मध्य घनात्मक आर्थिक सहसंबंध पाया गया।

सहारन, सुरेंद्र कुमार एवं प्रियंका सेठी (2003) ने माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की मानसिक योग्यता का समान जागरूकता, अभिवृत्ति एवं शिक्षण अभिक्षमता के संदर्भ में अध्ययन शीर्षक पर परियोजनात्मक शोध कार्य किया और शोध कार्य के निष्कर्ष में पाया कि आयु संस्था के प्रकार एवं लिंग के आधार पर मानसिक योग्यता में कोई सार्थक अंतर नहीं है- क्षेत्रा, आयु एवं लिंग के आधार पर सामान्य जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। परंतु गैर सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों में सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों की तुलना में सामान्य जागरूकता अधिक पाई गई। मानसिक योग्यता और सामान्य जागरूकता, मानसिक योग्यता एवं शिक्षण अभिक्षमता में सकारात्मक सार्थक सहसंबंध पाया गया। शिक्षण अभिक्षमता एवं मानसिक योग्यता मं◌े लिंग के संदर्भ में कोई परिवर्तन नहीं पाया गया।

वर्मा, रचना मोहन (2004) ने शहरी एवं ग्रामीण छात्राओं में समायोजन और व्यक्तित्वशील गुणों का तुलनात्मक अध्ययन उन्होंने अपने अध्ययन के निष्कर्ष रूप में पाया शहरी क्षेत्रों के माता-पिता अपने बच्चों की जरूरतें, रूचियों और उनके आराम की तरफ ध्यान देते हैं। वे उन्हें अच्छा वातावरण प्रदान करते हैं ताकि उनके बच्चे पारिवारिक जीवन में समायोजन कर सकें। लेकिन आजकल ग्रामीण क्षेत्रों में भी यद्यपि माता-पिता अधिक शिक्षित नहीं होते फिर भी वे बच्चों को पर्याप्त सुविधाएं और अच्छा पारिवारिक वातावरण देते हैं। यह अच्छे पारिवारिक समायोजन में सहायक है। इनके आंतरिक एवं बाह्य व्यक्तित्व में कोई अंतर नहीं है। वर्मा, रचना मोहन (2004) ने ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विशेषक और समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन विषय पर पी.एचडी. स्तरीय शोध कार्य 960 विद्यार्थियों पर किया। अध्ययन के निष्कर्ष में प्राप्त किया कि व्यक्तित्व के

प्रभावी विशेषकों मंे सार्थक अंतर पाया गया। ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों में शहरी छात्रा अधिक प्रबल व्यक्तित्व के पाए गए। ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों में कम प्रतिभाशाली व अधिक प्रतिभाशाली व्यक्तित्वों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अंतरर्मुखी व्यक्तित्वों की श्रेणी में अधिक महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया।

डूचेवा, जैड (2005) ने अध्यापकों के केरियर के विकास में व्यवसायिक समायोजन का अध्ययन किया। जिसके निष्कर्ष निम्नलिखित थे- कार्यस्थल, कार्यस्थिति जैसे तत्व व्यवसायिक समायोजन के साथ सकारात्मक रूप से संबंधित थे। व्यवसायिक समायोजन का प्रभाव अध्यापकों के केरियर निर्माण पर सकारात्मक पाया गया।

रोलैंड, जी.फ्रायर (2006) ने - युवा बच्चों में जातिगत विभिन्नता में मानसिक योग्यता के लिए परीक्षण शीर्षक पर परियोजनात्मक शोधकार्य किया और निष्कर्ष में पाया कि अन्य जातियों की तुलना में एशियन जाति के बच्चों में अधिक व्यक्तिगत विभिन्नताएं पाई गईं। व्यक्तिगत विभिन्नताओं के संदर्भ में उनकी बुद्धिमता, आयु, मानसिक योग्यता आदि आयामों के परीक्षण में संख्यात्मक अंतर पाया गया।

शर्मा सरिता (2006) ने - महाविद्यालयीन शिक्षकों द्वारा अवलोकित स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों के संस्थागत वातावरण तथा उनकी समायोजित समस्याओं के संबंध का एक अध्ययन शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में पाया कि महाविद्यालयीन शिक्षकों द्वारा अवलोकित स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों के संस्थागत वातावरण तथा उनकी समायोजन समस्याओं में लिंग-भेद, आर्थिक, सामाजिक रूचि तथा क्षेत्रा विशेष के परिप्रेक्ष्य में अंतर पाया गया। पुरूष शिक्षक, महिला शिक्षकों की तुलना में अधिक समायोजित थे।

जोहंग, फाई एवं अन्य (2006) ने चायना कर्मचारियों में मानसिक योग्यता एवं मनोवैज्ञानिक कार्य उपलब्धि शीर्षक पर साईशुन विश्वविद्यालय से प्रयोजनात्मक शोध कार्य किया। शोध कार्य के निष्कर्ष में पाया कि मनोवैज्ञानिक कार्य उपलब्धि के कार्य का प्रकार, मानसिक योग्यता, शैक्षिक स्तर समूह में सार्थक अंतर पाया गया। मानसिक योग्यता का लिंग, आयु, शैक्षिक स्तर, कार्य के प्रकार में सकारात्मक सहसंबंध पाया गया। उच्च मानसिक योग्यता उच्च मनोवैज्ञानिक कार्य का प्रदर्शन करती है।

भार्मा सरिता (2006) ने महाविद्यालयी शिक्षकों द्वारा अवलोकित स्ववित्त पोषित महाविद्यालय के संस्थागत वातावरण तथा उनकी समायोजन समस्याओं का संबंध एक गहन अध्ययन विषय पर पी.एचडी.स्तरीय शोध कार्य किया और अध्ययन में पाया कि महाविद्यालयीन शिक्षकों द्वारा अवलोकित स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों के संस्थागत वातावरण तथा उनकी समायोजन समस्याओं में लिंग भेद, आर्थिक सामाजिक स्तर तथा क्षेत्र विशेष के परिप्रेक्ष्य में अंतर पाया गया। पुरूष शिक्षक, महिला शिक्षकों की तुलना में अधिक समायोजित थे।

चावला परमजीत कौर एवं भार्मा, एस.(2007) ने विद्यालयी छात्राओं (7-9) वर्ष में पोषण स्तर एवं मानसिक योग्यता पर पोषण परामर्श का प्रभाव शीर्षक पर पंजाब एग्रीकल्चर विश्वविद्यालय लुधियाना से प्रयोजनात्मक शोधकार्य किया। शोध के निष्कर्ष में पाया गया कि पोषण परामर्श के बाद आई.क्यू. प्राप्तांकों में सार्थक वृद्धि पाई गई। छात्राओं के प्रतिशतांक उच्च बुद्धिमता में उच्च वृद्धि होती है। छात्राओं की माता की पोषण परामर्श के परिणाम स्वरूप अतिरिक्त पोषण एवं मानसिक योग्यता पर प्रभाव पाया गया। सफिह जबरन-अल-

घामरी यमन गणराज्य में माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में मानसिक योग्यता के साथ आयु, लिंग एवं विद्यालय उपलब्धियों के संबंधों का अध्ययन शीर्षक पर पीएच.डी. स्तरीय शोध कार्य किया और शोध कार्य के निष्कर्ष में पाया कि विभिन्न आयु समूह के विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धी में सार्थक अंतर पाया गया। महिला-पुरूष एवं उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता में सार्थक अंतर पाया गया। मानसिक योग्यता एवं विद्यालय उपलब्धि में सार्थक सहसंबंध पाया गया।

राव डी.सी. 2007 ने वाक्चार्तुय एवं मानसिक योग्यता में संबंध - शीर्षक पर इंडियन सांख्यिकी संस्थान, कोलकाता से प्रयोजनात्मक शोधकार्य किया और निष्कर्ष में पाया कि वाक्चार्तुय के गुणों में एवं मानसिक योग्यता के निर्धारण में लिंग एवं अन्य किसी संबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शर्मा कनक 2008 ने किशोरों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन समायोजन तथा रक्षात्मक युक्ति के संदर्भ में किया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य किशोरों की संवेगात्मक बुद्धि तथा समायोजन के मध्य संबंध का अध्ययन करना था। इसके लिए न्यादर्श के रूप में गौतम बुद्ध नगर, जिले के दनकौर एवं बिलासपुर में स्थित माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत 120 किशोरों का चयन साधारण याद्रेच्छिक विधि द्वारा किया गया। प्रदत्त संकलन के लिए उपकरण के रूप में एस.के.मंगल व शुभ्रामंगल की मंगल इमनोशनल इंटेलीजेंसी इनवेंट्री, बी.के.मित्तल की एडजेस्टमेंट इनवेंट्री का उपयोग किया गया तथा प्रदत्त विश्लेषण के लिए सहसंबंध का उपयोग किया गया। इस अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि संवेगात्मक बुद्धि तथा समायोजन के मध्य सार्थक घनात्मक सहसंबंध पाया गया।

कपूर डाॅ. अर्चना, श्रीवास्तव निधि 2008 ने- कार्यरत महिलाओं के वैवाहिक समायोजन का बालक एवं बालिकाओं के व्यक्तित्व पर प्रभाव शीर्षक पर पी.एचडी. स्तरीय शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि उच्च वैवाहिक समायोजन वाली कार्यरत महिलाओं के व्यक्तिव कारक आय संबंधी गुण (संवेदनशीलता, अनुशासन एवं आत्मसम्मान) के संदर्भ में बालक औसत से निम्न स्तर के पाए गए एवं बालिकाएं निम्न स्तरीय पाई गई। व्यक्तित्व कारक से संबंधित विशेषताएं-मूर्त चिंतन एवं साहित्यिक वर्णन की क्षमता बालिकाओं में निम्न कोटि की पाई गई। निम्न वैवाहिक समायोजन वाली कार्यरत महिलाओं की बालिकाओं दोनों में बुद्धिमता निम्न स्तरीय पाई गई। निम्न वैवाहिक समायोजन के संदर्भ में बालिकाएं, बालकों की अपेक्षा, उत्तेजनापूर्ण, धैर्यशाली, क्रियाशील, विचारशील एवं दायित्वों का निर्वाह् करने वाली पाई गई।

हैज, माया जानिया (2008) ने - अफ्रीकन एवं अमेरिकन महाविद्यालयों के छात्रों का सांस्कृतिक परिचय, सामाजिक समायोजन तथा शैक्षिक समायोजन विषय पर शोध कार्य किया। इन्होंने शोध के निष्कर्ष में पाया कि- पी.डब्ल्यू.सी.यू. स्तर के विद्यार्थी, एच.बी.सी.यू. स्तर के विद्यार्थियों की अपेक्षा महत्वपूर्ण रूप से उक्त स्तर पर सांस्कृतिक पहचान रखते हैं। संस्कृति पहचान के स्तर, समायोजन के साथ महत्वपूर्ण रूप से जोड़े थे। जबकि समायोजन के कुछ आयामों पर यह पूर्णतया भिन्न है। यह भी दृष्टिगत हुआ कि सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन सामान्य रूप से सकारात्मक रूप से जुड़े हुए थे।

बुमाई (2008) ने चीन में भाषाई अल्पसंख्यक वर्ग के एक अग्रणीय विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक सांस्कृतिक, शैक्षिक समायोजन शीर्षक पर पी.एचडी. स्तरीय शोध कार्य किया। इन्होंने पाया कि - अल्पसख्यंक वर्ग के विद्यार्थियों के लिए प्रभुत्व नीतियों ने मुख्य प्रोत्साहनकर्ता के रूप में इस विश्वविद्यालय में

प्रवेश के लिए कार्य किया। साक्षात्कार के विश्लेषण ने यह दर्शाया कि समायोजन एवं सामाजिक संस्कृति वाले भाषाई अल्पसंख्यक विद्यार्थी तनाव की चुनौती एवं शोध का सामना करते हैं।

जैनीफर, के.बम्बरा और केन्थिया, ओवेसले (2008) ने - दृष्टिदोष के संदर्भ में सामाजिक समस्या समाधान योग्यता एवं समायोजन पर पारिवारिक देखरेख का अध्ययन शीर्षक पर प्रयोजनात्मक शोध कार्य किया। निष्कर्ष में पाया कि प्राप्तांकों के आधार पर दृष्टिदोष किशोरों में सामाजिक समाधान योग्यता में कमी पाई गई। दृष्टिदोष किशोरों के संबंधियों द्वारा की गई व्यक्तिगत देखरेख से उनके संवेगात्मक दबाव में सुधार होता है।

क्लीपर, हुट्टीया (2008) ने दक्षिण-पश्चिमी पेंनेसुलिनिया में अचानक आए शरणार्थियों के समायोजन अनुभव तथा दृष्टि का वर्णात्मक अध्ययन शीर्षक के अंतर्गत शोध कार्य किया। इन्होंने अपने शोधकार्य के निष्कर्ष में पाया कि कैसे औपचारिक, अनौपचारिक शिक्षा इन शरणार्थियों को घरेलू, राजनैतिक, आर्थिक व सामाजिक दृष्टि से इनके समायोजन को प्रभावित करती हैं। इसके साथ इन्होंने पाया कि शैक्षिक दृष्टि से ऐसी संस्थाएं निर्मित की जाना चाहिए तथा ऐसे कार्यक्रम चलाए जाना चाहिए, जो समायोजन में सहायक हो।

त्रिपाठी, ब्रजेशचंद्र (2008) ने बी.एड. महाविद्यालयों के विद्यार्थी अध्यापकों के समायोजन की जांच विषय पर शोधकार्य किया। इन्होंने अध्ययन में पाया कि नगरीय, ग्रामीण, पुरूष-महिला, कला विज्ञान, चरों पर आधारित तुलतनात्मक विवेचन से समायोजन में वरियता क्रम से सामाजिक, सांवेगिक, शैक्षिक तथा स्वास्थ्य के क्षेत्रा में सार्थक अंतर पाया गया।

तिवारी सारिका, पांडे राजेश (2009) ने- विद्यार्थियों में समायोजन क्षमता का अध्ययन एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर प्रयोजनात्मक शोधकार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि शहरी विद्यालयों एवं ग्रामीण विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की सामाजिक समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर नहीं है। अर्थात् विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता इस बात से प्रभावित नहीं होती है कि वे शहरी विद्यालयों में अध्ययनरत हैं या ग्रामीण विद्यालयों में अर्थात समायोजन क्षेत्र विशेष से यह प्रभावित रहता है।

निफेडकर, सुशील श्याम (2009) ने संवेगों एवं नवआगंतुकों से समायोजन शीर्षक पर प्रयोजनात्मक शोधकार्य किया। इन्होंने पाया कि पुनः मूल्यांकन एक भाव नियामक दिशा सकारात्मक रूप से सामाजिक समायोजन से संबंध रखते हैं और दलीय विशेषताएं नवागंतुक समायोजन को सामाजिक चिंता से प्रभावित करते हैं। जो नवागंतुक समायोजन से ऋणात्मक संबंध रखती हैं।

वाजपेयी आशीष, शुक्ला, हरगोविंद एवं माकवे, जमनाप्रसाद 2009 ने किशोरावस्था के विद्यार्थियों के समायोजन का लिंग के परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक अध्ययन किया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य किशोरावस्था के विद्यार्थियों के समायोजन का लिंग के परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक अध्ययन करना था। इसके लिए न्यादर्श के रूप में होशंगाबाद जिले के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत किशोरावस्था के 140 विद्यार्थियों, 70 छात्र व 70 छात्राओं का चयन साधारण याद्रेच्छिक विधि से किया गया। प्रदत्त संकलन के लिए उपकरण के रूप में रागिनी दुबे की किशोर समायोजन मापनी तथा प्रदत्त विश्लेषण के लिए प्रांतीक अनुपात परीक्षण का प्रयोग किया।

बुमाई (2008) ने चीन में भाषाई अल्पसंख्यक वर्ग के एक अग्रणीय विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक समायोजन शीर्षक पर पी.एचडी. स्तरीय शोध कार्य किया। इन्होंने पाया कि-

अल्पसंख्यक वर्ग के विद्यार्थी के प्रभुत्व नीतियों ने मुख्य प्रोत्साहनकर्ता के रूप में इस विश्वविद्यालय में प्रवेश के लिए कार्य किया।

वैद्य, रानी एवं उपाध्याय, एच. 2010 ने किशोर विद्यार्थियों के समायोजन पर संवेगात्मक बुद्धिगुणांक के प्रवाह का अध्ययन किया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य समायोजन पर लिंग संवेगात्मक बुद्धि गुणांक व उनकी संयुक्त अंतक्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना था। इसके लिए न्यादर्श के रूप में जलबपुर जिले के स्थित व माध्यमिक शिक्षा मंडल मध्यप्रदेश से संबंद्धता प्राप्त विद्यालयों के कक्षा 11वीं में अध्ययनरत एक हजार विद्यार्थियों (500 छात्रा एवं 500 छात्राएं) का चयन साधारण याद्रेच्छिक विधि से किया गया। प्रदत्त संकलन के लिए उपकरण के रूप में अरूण कुमार सिंग एवं अल्पना सेन गुप्ता की हाईस्कूल एडजस्टमेंट इन्वेंट्री तथा हेडे, देठे तथा उपेंद्र की संवेगात्मक बुद्धि मापनी का प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए अनोबा परीक्षण का उपयोग किया गया। इस अध्ययन के निष्कर्षतः ज्ञात हुआ कि लिंग का गृह, स्वास्थ्य, सामाजिक संवेगात्मक तथा समग्र समायोजन छात्राओं की तुलना में उच्च पाया गया। संवेगात्मक बुद्धि का समायोजन तथा समायोजन के विभिन्न क्षेत्रों पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। लिंग तथा संवेगात्मक बुद्ध की अंतरक्रिया का भी समायोजन तथा समायोजन के विभिन्न क्षेत्रों पर कोई प्रभाव नहीं पाया गया।

भारती ए.के. (2010) – शहरी एवं ग्रामीण किशोर एवं किशोरियों के व्यक्तित्व समायोजन का अध्ययन किया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य शहरी एवं ग्रामीण किशोरों के व्यक्तित्व समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना था। इसके लिए 15 से 18 आयु वर्ष के महाविद्यालयों में अध्ययनरत 300 शहरी एवं 300 ग्रामीण वर्ग 300 विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृत याद्रेच्छिक विधि द्वारा किया गया। प्रदत्त संकलन के लिए उपकरण के रूप में डाॅ. आर.पी.सिंग की समायोजन प्रतिसूची का प्रयोग किया गया तथा प्रदत्त विश्लेषण के लिए टी का प्रयोग किया गया।

शोध साहित्य का सारांश -

हमें इस अध्ययन से समाज स्वरूप तथा कार्यक्षेत्रा में शिक्षा के माध्यमों का अलग-अलग होने पर उनकी मानसिक योग्यता तथा कार्यकुशलता पर प्रभाव समझने में मदद प्राप्त होगी।

शोध के प्रश्न -

01. स्नातक स्तर के कलावर्ग/विज्ञान वर्ग के हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता और समायोजन में अंतर का अध्ययन करना।

02. स्नातक स्तर के कलावर्ग/विज्ञान वर्ग के हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता और समायोजन पर प्रभावों का अध्ययन करना।

समस्या का कथन -

उज्जैन शहर के स्नातक काॅलेजों में हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।

। बवउचंतंजपअम ेजनकल वद उमदजंस ंइपसपजल ंदक ंकरनेजउमदज व िंीपदकप ंदक मदहसपेी उमकपनउ ेजनकमदजे ेजनकलपदह पद कमहतमम बवससमहमे व िनररंपद बपजलण्

शोध अध्ययन के उद्देश्य -

01. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत कलावर्ग के हिंदी और अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता का अध्ययन करना।

02. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत विज्ञान वर्ग के हिंदी और अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता का अध्ययन करना।

03. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत कलावर्ग के हिंदी और अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के समायोजन पर अध्ययन करना।

04. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत विज्ञान वर्ग के हिंदी और अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के समायोजन पर अध्ययन करना।

05. उच्च शिक्षा में अध्ययनरत कलावर्ग/विज्ञान वर्ग के हिंदी व अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता एवं समायोजन का सहसंबंध अध्ययन करना।

चरों की परिभाषा -

प्रस्तुत शोध अध्ययन में दो प्रकार के चरों का अध्ययन किया गया है।

01. आश्रित चर- मानसिक योग्यता और समायोजन

02. स्वतंत्रा चर- विद्यार्थी

परिभाषा –

चर से तात्पर्य वस्तु, घटना तथा चीज से उन गुणों से होता है, जिन्हें मापा जा सकता है।

करलिंगर (1964) के अनुसार - **चर** एक ऐसा गुण होता है, जिसकी अनेक मात्राएं हो सकती हैं।

आश्रित चर का अर्थ - किसी भी प्रयोग या शोध में आश्रित चर वह होता है, जिसके बारे में शोधकर्ता या प्रयोगकर्ता कुछ पूर्व कथन करना चाहता है। सचमुच में यह चर चर होता है, जिसे प्रयोगकर्ता सावधानीपूर्वक निरीक्षण करता है तथा उसे रिकार्ड करता है।

हिल (1980) के अनुसार **आश्रित चर** वह है, जिसके बारे में हम पूर्व कथन करते हैं।

मानसिक योग्यता –

मानसिक योग्यता एक व्यवहार मापने का गुण है। यह एक अनुमान है, जिसे व्यवहार से लिया गया है। विभिन्न विचारों ने मानसिक योग्यता का अलग-अलग प्रकार समझाया है।

पिंटर के विचारों के अनुसार - यह एक ऐसी क्षमता है, जो स्वयं को सुनियोजित तरीके से जिंदगी में नई परिस्थितियों में ढालती है।

समायोजन –

समायोजन एक निरंतर प्रक्रिया है, जिसमें एक व्यक्ति स्वयं और उसके/अपने पर्यावरण के बीच अधिक मैत्रीपूर्ण/मधुर संबंध पैदा करने के लिए अपना व्यवहार बदलता है।

मनोविज्ञान में परस्पर विरोधी आवश्यकताओं को संतुलित करने की व्यवहार-संबंधी प्रक्रिया को समायोजन कहते हैं। इसी प्रकार पर्यावरण की कठिनाइयों एवं बाधाओं को ध्यान में रखते हुए व्यवहार में जो परिवर्तन किए जाते हैं, उन्हें समायोजन कहते हैं।

स्वतंत्र चर –

स्वतंत्रा चर वैसे चर को कहा जाता है, जिसमें प्रयोगकर्ता द्वारा जोड़-तोड़ किया जाता है। दूसरे शब्दों में स्वतंत्रा चर वह चर है, जिसके मूल्यों में प्रयोगकर्ता परिवर्तन करता है और इस परिवर्तन का प्रभाव उस आश्रित चर पर पड़ता है। यह देखता है।

विद्यार्थी - विद्या़अर्थी जिसका अर्थ होता है विद्या चाहने वाला।

अध्ययन की परिकल्पना: -

अध्ययन के लिए शोधकत्री द्वारा उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए निम्न परिकल्पनाएं निर्मित की गई हैं -

01. उच्च शिक्षा का कलावर्ग के हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता पर प्रभाव पड़ता है।

02. उच्च शिक्षा का विज्ञान वर्ग के हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता पर प्रभाव पड़ता है।

03. उच्च शिक्षा का कलावर्ग के हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के समायोजन पर प्रभाव पड़ता है।

04. उच्च शिक्षा के विज्ञान वर्ग के हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के समायोजन पर प्रभाव पड़ता है।

05. उच्च शिक्षा का कलावर्ग व विज्ञान वर्ग के हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता एवं समायोजन के सहसंबंध पर भी प्रभाव पड़ता है।

शोध विधि -

शोध में अध्ययन की विधि से तात्पर्य एक निश्चित व्यवस्था के आधार पर अध्ययन करने की प्रणाली से है। अतः प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होने के लिए शोध की प्रकृति को देखते हुए सर्वेक्षण शोध विधि का उपयोग किया गया है।

जनसंख्या -

जनसंख्या समय अवधि को ध्यान में रखकर अध्ययन की जनसंख्या की दृष्टि से सीमांकित करते हुए उज्जैन शहर के स्नातक कॉलेजों में कलावर्ग व विज्ञान वर्ग में हिन्दी और अंग्रेजी माध्यम में अध्ययनरत 500 छात्राएं शामिल की गई।

प्रतिदर्श -

शोध अध्ययन के अंतर्गत उज्जैन शहर के स्नातक स्तर पर पांच कलावर्ग व पांच विज्ञान वर्ग के कॉलेजों को सम्मिलित किया गया है।

शोध उपकरण-

अनुसंधान के आंकड़ों का संकलन करने के लिए कुछ साधनों की आवश्यकता होती है, जिसके सिहारे शोधकर्ता अपने उद्देश्यों की प्राप्ति कर सकता है। इन्हीं साधनों को उपकरण कहते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया है

1. मानसिक योग्यता स्केल (G.I.T). - Rama Tiwari and Ram Pal.
2. Adjustment Inventory for college students - A.K.P.Singh and R.P. Singh.

प्रदत्तों की प्रकृति - प्रस्तुत अध्ययन में प्राप्त प्रदत्तों की प्रकृति मात्रात्मक होगी।

सांख्यिकी विधियां -

प्रदत्तों के संकलन के पश्चात अनुमानिकीय सांख्यिकी का प्रयोग किया जाएगा।

परिसीमाएं -

शोध की समस्या और एकल शोधकर्ता के समय और सामथ्र्य को दृष्टि में रखते हुए इस शोध का सीमांकन निम्नवत किया गया है-

01. यह अध्ययन उज्जैन शहर के स्नातक कलावर्ग व विज्ञान वर्ग कॉलेजों में हिन्दी और अंग्रेजी स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों पर सीमित है।

02. अध्ययन के न्यायदर्श में स्नातक कॉलेजों में अध्ययनरत बालक और बालिकाओं को सम्मिलित किया गया है।

03. वर्तमान में अध्ययनरत उज्जैन शहर के 10 स्नातक कॉलेजों को सम्मिलित किया गया है। सभी विद्यार्थी केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित शासकीय उच्च शिक्षा महाविद्यालयों से तथा निजी अशासकीय उच्च शिक्षा महाविद्यालयों को लिया गया है।

अध्याय वर्गीकरण -

प्रस्तुत शोध-प्रबंध परम श्रद्धेय डाॅ.मंजू शर्मा के निर्देशन में संपन्न होगा। प्रस्तुत शोध प्रबंधकीय प्रस्तावित विषय सूची को पांच अध्यायों में बांटा गया है।

प्रथम अध्याय शोध की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि इस अध्ययन का औचित्य शोध संबंधी साहित्य का अध्ययन, ज्ञान रिक्तता, शोध प्रश्न, प्रकरण, चरों की परिभाषा, उद्देश्य, परिकल्पना के आधार व परिसीमन सम्मिलित होगा।

द्वितीय अध्याय - शोध विधि एवं प्रक्रिया शोध विधि का औचित्य संबंधित साहित्य की समीक्षा के साथ जनसंख्या, परिकल्पना, शोध उपकरण, सांख्यिकी विधियां, संबंधित साहित्य की समीक्षा के साथ।

तृतीय अध्याय - प्रदत्तों का विश्लेषण।

चतुर्थ अध्याय- परिकल्पनाओं का परीक्षण।

पंचम अध्याय- शोध निष्कर्ष व सुझाव।

संन्दर्भ ग्रन्थ सूची -

01. अग्रवाल, जे.सी. (1996): एजुकेशनल रिसर्च नई दिल्ली: आर्य बुक डिपो

02. बैस, डाॅ. नरेन्द्र सिंह एवं राजोरिया ऐ.के. (2006): शिक्षा मनोविज्ञान, जैन प्रकाशन मंदिर, जयपुर।

03. कोठारी सी.आर. (1986): रिसर्च मेथोडोलाॅजी, नई दिल्लीः विली इस्टर्न लिमिटेड

04. कौल, लोकेशन (2007): ष्शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, नई दिल्ली: विकास पब्लिसिंग हाउस प्रा.लि.

05. मिश्रा. डाॅ. एम.के. (2009): समायोजनात्मक, मनोविज्ञान नई दिल्ली: अर्जुन पब्लिशिंग हाउस।

06. पाठक. पी.डी. (2011): शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।

07. गुप्ता डाॅ. रेणु (2007): उदीयमान भारतीय समाज में ष्शिक्षा, नई दिल्ली: जगदम्बा पब्लिकेशन कम्पनी

08. सिंह गया तथा राय, अनिल कुमार (2013), ष्शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ आर.लाल. बुक डिपो मेरठ

09. जी.सी. (2011) अध्यापक शिक्षा अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा-2

10. लीला, ए.वी. एस. (1998) महाविद्यालय के विद्यार्थियों में व्यक्तित्व लक्षणों के संदर्भ में धार्मिकता व समायोजन का अध्ययन: भारतीय शिक्षा ष्शोध पत्रिका वाल्यूम 16, संख्या 1 जून-जूलाई, 1998 पृ.सं. 27

11. पुरोहित, नीतू एवं मेहता, मन्जू (2002) किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं माता-पिता के व्यवहार संबंध का अध्ययन बूच फिकथ सर्वे आॅफ रिसर्च इन एजूकेशन लखनऊ यूनिवर्सिटी पष्.स.

12. एमएचआडी (2016) एनुअल रिपोर्ट, डिपार्टमेंट आॅफ हायर एजूकेषन गवर्मेंट आॅफ इंडिया, नई दिल्ली।

13. ैपदहीए श्रण्क्ण् ;2013द्ध भ्पहीमत म्कनबंजपवद प्दकपंए प्ेेनमेए ब्ीेंससमदहमे ंदक ेनहहमेजपवदण् प्द ीपहीमत मकनबंजपवद ;चण्चण् 93.100द्ध ळमतउंदल स्।डठम्त्ज् ।बंकमउपब च्नइसपेीपदहण्

14. ैपदही श्रण्क्ण् ;2015द्ध भ्पहीमत म्कनबंजपवद वित जीम 21ेज बमदजनतलण् न्दपअमतेपजल छमूे . 53 ;26द्ध चण्चण् 18.23